37.5° अधिकतम | 21.9° न्यूनतम | सूर्योदयः 05.54 सूर्यास्तः 06:12

काशी-क्योटो के बीच समझौता हो सकता है उपयोगी, प्रो. सीजियो फ्युजी और प्रो. राजीब शॉ ने दिये संकेत

अन्य शहरों से भी करार करेगा जापान

जगी उम्मीद

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

काशी-क्योटो के बीच हुआ पार्टनर सिटी समझौता देश के अन्य शहरों के लिए भी उपयोगी होगा। बनारस से हुए समझौते के बेहतर परिणाम निकले तो आने वाले दिनों में अन्य प्रमुख धार्मिक शहरों के साथ क्योटो या जापान सरकार समझौता कर सकती है।

ये संकेत शुक्रवार को महापौर रामगोपाल मोहले से मिलने पहुंचे क्योटो यूनिवर्सिटी के डीन प्रो. सीजियो फ्युजी और प्रो. राजीब शॉ ने दिए। उन्होंने बताया कि काशी के साथ हुए समझौते का जापान सरकार और क्योटो यूनिवर्सिटी अलग-अलग अध्ययन कर रही है। 6 से 8 महीने में इसकी रिपोर्ट आ जाएगी। इसके बाद नए समझौतों पर कवायद हो सकती है।

पहली बार भारत आए सेनिटेशन एक्सपर्ट प्रो. फ्युजी ने कहा कि क्योटो यूनिवर्सिटी बनारस के विकास के हर मुद्दे पर मिलकर काम करने को तैयार है। महापौर ने इसका स्वागत किया। उन्होंने जापानी भाषा का बनारस और हिंदी-भोजपुरी का जापान में केंद्र खोलने की मांग की, ताकि दोनों जगह के पर्यटकों को भी आसानी हो। महापौर के सलाहकार राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि क्योटो यूनिवर्सिटी के अध्ययन का प्रयोग देश के अन्य शहरों के लिए भी हो सकता है। इससे पहले डीन प्रो. फ्युजी ने महापौर को बनारस में आपदा प्रबंधन पर किए गए अध्ययन की रिपोर्ट सौपी। इस अवसर पर विदेश मंत्रालय की निदेशक राज्य डॉ. देवयानी खोबरागड़े, क्योटो के शोध छात्र रानित चटर्जी, प्रो. एएस रघुवंशी, शोध छात्र प्रमित, नेहा, नगर आयुक्त उमाकांत त्रिपाठी, अपर नगर आयुक्त बीके द्विवेदी, चीफ इंजीनियर कैलाश सिंह उपस्थित थे।

क्योटो से आए दल ने शुक्रवार को गंगा में बोटिंग की और घाट का नजारा देखा। • हिन्दुस्तान

सुबह का नजारा देख जापानी दल अभिभूत

वाराणसी। जापानी दूतावास और क्योटो यूनिवर्सिटी का दल सुबह गंगा और घाट किनारे का नजारा देख अभिभूत हुआ। दल के सदस्य मोटर बोट से दशाश्वमेध घाट से अस्सी तक गए। गंगा के बीच से घाटों को देख बोले ऐसा नजारा कहीं नहीं दिखा। हालांकि घाट किनारे कई जगह माला-फूल देखकर आश्चर्य जताया। जोनल अधिकारी दशाश्वमेध अरविंद यादव से पूछा कि इसकी सफाई नहीं होती क्या? अस्सी घाट पर उतरकर देखा कि प्रधानमंत्री ने जहां से सफाई अभियान शुरू किया, उसका क्या हाल है? इस दौरान सुबह-ए-बनारस का मंच भी देखा।

पहली अप्रैल से शुरू होगी शिक्षा में सहयोग

वाराणसी। बीएचयू और क्योटो विश्वविद्यालय पहली अप्रैल से शिक्षा क्षेत्र में सहयोग शुरू कर देंगे। इस आशय के सहमति पत्र पर शुक्रवार को दोनों पक्षों ने हस्ताक्षर कर दिये। बीएचयू की ओर से रेक्टर कमलशील और क्योटो यूनिवर्सिटीज ग्रेजुएट स्कूल ऑफ ग्लोबल इनवायरमेंटल स्टडीज के डीन प्रो. शीजियो फुजी ने दस्तखत किये।

बाद में केंद्रीय कार्यालय के समिति कक्ष संख्या एक में पत्रकारों से बातचीत में इस अभियान का समन्वय कर रहे बीएचयू के पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान के निदेशक प्रो. एएस रघुबंशी और क्योटो विवि के प्रो. राजीब शॉ ने बताया कि दोनों संस्थाएं पर्यावरण क्षेत्र में शैक्षणिक आदान-प्रदान करेंगी। इसके लिए शोध छात्रा नेहा साहू और प्रमित वर्मा का चयन किया गया है। प्रो. शॉ ने बताया कि छह महीने या एक वर्ष के लिए दोनों संस्थाओं के छात्र अध्ययन कर सकेंगे। सहमति पांच वर्षों के लिए बनी है। भारत में बीएचयू पहला विवि है, जिससे जापान के किसी विवि से ऐसा करार हुआ है। **वसं**

शैक्षणिक आदान-प्रदान के लिए शुक्रवार को बीएचयू और क्योटो विवि में समझौता हुआ।

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट देखा, जानी तकनीकी

जापानी दल ने भगवानपुर स्थित सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट को देखा। प्लांट की तकनीकी जानी और शहर में इस तरह के छोटे-छोटे एसटीपी बनाने की बात कही। इसके बाद करसड़ा स्थित सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के प्लांट भी गए।

कुछ घाटों को बनाएंगे मॉडल : निदेशक हेरिटेज सिटी शुभा ठाकुर ने भी जापानी दल के साथ सुबह घाटों का नजारा लिया। जोनल अधिकारी दशाश्वमेध अरविंद यादव से काफी जानकारी ली। कहा कि 4-5 घाटों को मॉडल घाट के रूप में विकसित किया जाएगा।